Volume : 4 | Issue : 9 | Sept 2015 ISSN - 2250-1991

Research Paper History

प्राचीन मथुरा का सन्दर्भ एवं बुद्ध से इसका सम्बन्ध

Suraj Pratap

ABSTRACT

प्राचीन भारतीय इतिहास में मथुरा का विवरण एक महान सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में प्राप्त होता है। समस्त वैदिक साहित्य में तथा पालि ग्रन्थों में इसका स्पश्ट उल्लेख हमें देखने को मिलता है किन्तु बौद्ध संस्कृति का उद्भव केन्द्र बनने व बुद्ध की छाया पड़ने के कारण छठवी षताब्दी ई0पू0 में एक नवीन संस्कृति का उदय हम देखते है। मथुरा मे बुद्ध आगमन से लेकर 12वीं षताब्दी तक हम इस नगर को बौद्ध नगरी के केन्द्र के रूप में स्थापित पाते है। जिसका प्रमाण हवेनसांग के विवरण व अन्य बौद्ध ग्रन्थों में उपलब्ध है। हिन्दू संस्कृति से प्रभावित रहने के बावजूद अपनी बौद्ध संस्कृति को बनाये रखा था। वर्तमान समय में भी अनेक विहारो एवं बौद्ध संस्कृति के केन्द्रों का उद्घाटन हो रहा है।

KEYWORDS

स्थिति – यमुना नदी के किनारे पर स्थित समुद्र तट से 187 मीटर की ऊँचाई पर स्थित उत्तर प्रदेष का मथुरा जनपद अपनी एक विषेश पहचान लिये हुए है। वर्तमान समय में हिन्दू धार्मिक आस्था के केन्द्र के रूप में अपने अस्तित्व को विकसित कर चुका है। मथुरा, आगरा मण्डल का उत्तर पष्चिमी जिला है। यह रंज 27°41ष्छ और स्वदह 77°41ष्प के मध्य स्थित है। एवं जनपद का भौगोलिक क्षेत्रफल 3329.4 वर्ग किमी है।

विवरण : ई0पू0 पांचवी षताब्दी से इसका नगरी का उल्लेख मिलने लगता है। अंगुत्तर निकाय1 एवं मज्झिम[2] में वर्णित है कि बुद्ध के एक महान षिश्य महाकाच्चायन ने मथुरा में अपने गुरू के सिद्धान्तों की षिक्षा दी थी। मेगस्थनीज संभवता मथुरा को जानता था। और इसके साथ ही हेरेक्लीज के सम्बन्ध से भी परिचित था। माथुर[3] षब्द जैमिनी के पूर्व मीमांसा सूत्र में भी आया है। यद्यपि पाणिनी के सूत्रों में स्पश्ट रूप से मथुरा षब्द का उल्लेख नहीं है किन्तु वराणिद–गण[4] में इसका प्रयोग मिलता है को वासुदेव, अजुर्न[5], यादवों के अन्धक–वृश्णि लोग, सम्भवता गोविन्द भी[6] ज्ञात थे। पतंजलि के महाभाश्य में मथुरा षब्द कई बार आया है।[7] उत्तरा ध्ययनसूत्र में मथुरा को सौर्यपुर कहा गया है, किन्तु महाभाश्य में उल्लिखित सौर्य नगर मथुरा ही है। ऐसा कहना सन्देहात्मक है आ. दपर्व8 में आया है कि मथुरा अति सुन्दर गायो के लिए उन दिनों प्रसिद्ध थी। ब्रह्म पुराण (14/15–56) में आया है कि कृश्ण की सम्भति से वृश्णियों एवं अन्धको ने काल यवन के भय से मथुरा का त्याग कर दिया। वायु पुराण[9] का कथन है कि राम के भाई षत्रुध्न ने मधु के पुत्र लवण को मार डाला और मधुवन में समृद्धिषाली नगर बनाया। घट जातक[10] में मथुरा को उत्तर मथुरा कहा गया है। (दक्षिण में पाण्डवो की नगरी भी मथुरा के नाम से प्रसिद्ध थी। वहां कंस व वासुदेव की गाथा भी आई है। जो महाभारत एवं पुराणों की गाथा से भिन्न है।) रघुवंष[11] में इसे मथुरा नाम से षत्रुध्न द्वारा स्थापित कहा गया है।

हवेनसांग के अनुसार मथुरा में अषोकराज द्वारा तीन स्तूप बनवाये गये थे, पांच देवमन्दिर थे और बीस संघाराम थे, जिनमें 2000 बौद्ध रहते थे।[12]

षूरसेन जनपद की सीमा स्थिति – प्राचीन काल में मथुरा षूरसेन जनपद की राजधानी थी। इस षूरसेन जनपद का विस्तार दक्षिण में चम्बल नदी से लेकर उत्तर मे वर्तमान मथुरा नगर से 75 किमी0 उत्तर में स्थित कुरू (कुरूदेष) राज्य की सीमा तक था। उसकी सीमा पष्चिम में मत्स्य और पूर्व में पांचाल जनपद से मिलती थी। मथुरा नगर को महाकाव्यों में 'मथुरा' एवं 'मधुपुरी' नामो से संबोधित किया गया है।[13]

विद्वानों ने 'मधुपुरी' की पहचान मथुरा के 6 मील पष्चिम में स्थित वर्तमान 'महोली' से की है।[14] पूर्व काल एवं वर्तमान दोनो में ही यमुना का मथुरा से सम्बन्ध रहा है प्लिनी[15] ने यमुना को जोमेनस कहा है, जो मेथोरा और क्लीसोबोरा[16] के मध्य बहती थी। मथुरा में भगवान बुद्ध :– अंगुत्तर निकाय[17] से पता चलता है कि भगवान बुद्ध मथुरा पधारे थे। उन्होने मथुरा की पांच बाते बताई थी यथा :–

1. यहां के मार्ग विशम है। (विसमा)
2. धूल बहुत उड़ती है। (बहुरजा)
3. कुत्ते बड़े भयंकर है। (चण्ड सुनखा)
4. यहां के यक्ष अज्ञानी है। (बाल यक्खा)
5. भिक्षा मुष्किल से मिलती है। (दुल्लभं पिण्डा)

सर्वास्तिवादी बौद्ध परम्परा में [18] मथुरा के पांच दोश बताये गये है। जो उक्त पांचो से भिन्न है। गिलगित मैनुस्क्रिप्टस के अनुसार पांच दोश इस प्रकार है :–

1. मथुरा में ऊँच नीच कुलो का भेद अधिक है।
2. मार्गों में झाडियां और कांटे अधिक है।
3. पत्थर व गिट्टियां अधिक है।
4. रात्रि के पिछले पहर भोजन करने वाले लोग यहां रहते है।
5. यहां स्त्रियों की अधिकता है।

विमानवत्थु अट्टकथा से यह पता चलता है कि मथुरा में भगवान बुद्ध ने एक मरणासन्नस्त्री का भोजन दान में स्वीकार किया था और उसे उपदेष दिया था बौद्ध विद्वान अष्वघोश के अनुसार मथुरा में ही भगवान बुद्ध ने भयानक गर्दभ (यक्ष) को बौद्ध धर्म की दीक्षा दी थी।[19] मूल सर्वास्तिवादी विनय, दिव्यावदान एवं अषोकावदान में भी मथुरा को भगवान की चारिका का वर्णन मिलता है। इससे हम इस बात से अवगत होते है कि मथुरा में भ्रमण करते समय उरूमुण्ड पर्वत पर आनन्द ने तथागत गौतम बुद्ध को हरा–भरा वन दिखलाया था जिसे देखकर बुद्ध ने कहा था कि ''मेरे परिनिर्वाण के एक सौ वर्श बाद नट और भट नामक दो धनवान भाई यहां एक विहार बनायेगे।'' वे आगे कहे थे कि यही (उरूमुण्ड पर्वत) पर उपगुप्त की दीक्षा होगी जो दूर–दूर तक बुद्ध षासन का प्रचार करेगा [20]। इस प्रकार यह सिद्ध है कि उरूमुण्ड पर्वत पर एक बौद्ध विहार भी था उरूमुण्ड पर्वत की पहचान गोवर्धन पर्वत से की जाती है।[21] यघपि श्री प्रभु दयाल मित्तल ने उरूमुण्ड पर्वत की पहचान गोकर्णेष्वर मन्दिर स्थल से की है।[22] लेकिन विद्वानों ने इसे स्वीकार नहीं किया है।

दिव्यावदान और अषोकावदान में वर्णित बुद्ध की यह मथुरा यात्रा दूसरी यात्रा थी जो महा. परिनिर्वाण के कुछ पहले उन्होंने पूरी की थी।[23]इस दूसरी यात्रा के निर्वाचन (महासम्मत) की उन्होंने प्रषंसा की थी।[24]

मज्झिमनिकाय के अध्ययन से यह पता चलता है कि भगवान बुद्ध के महापरिनिर्वाण के पष्चात उनके प्रमुख षिश्य महाकात्यायन, धर्म प्रचार के लिए मथुरा गये थे।[25] वहां के राजा माथुर अवन्ति पुत्र को ''माधुरिया सुतन्त'' वहां के राजा माथुर अवन्ति पुत्र को ''माधुरिय सुतन्त'' का उपदेष दिया था।[26] उपर्युक्त निकाय से यह भी ज्ञात होता है कि महा. कात्यायन मथुरा के गुन्दावन में ठहरे थे। जिस की पहचान डॉ0 भरत सिंह उपाध्याय ने गोवर्धन पर्वत से कुछ दूर 'कृश्ण कुण्डवन' से की है। [27] डॉ अंगने लाल का अनुमान है कि यह वृन्दावन रहा होगा। चूंकि महाकात्यायन वहां ठहरे थे इसलिए वहां गुन्दावन विहार भी रहा होगा गुन्दावन विहार भी रहा होगा, गुन्दावन ही धीरे–धीरे वृन्दावन कहा जाने लगा।

इस प्रकार मथुरा नगर की स्वंय भगवान बुद्ध ने कम से कम दो बार यात्रा अवष्य की थी।डॉ0 आर0सी0 षर्मा ने यहां षंका व्यक्त की है कि चूंकि वेरंजा से भगवान बुद्ध मथुरा गये थे। और वेरंजा की पहचान स्थिति सुनिष्चित नहीं हो सकी है इसलिए बुद्ध की मथुरा यात्रा सन्देहास्पद है।[28]

किन्तु यह षंका निर्मूल है। क्योंकि वेरंजा की पहचान एटा जिला के अन्तर्गत स्थित अतरंजी खेड़ा के विषाल टीले से सुनिष्चित हो गयी है जहाँ के उत्खनन में उसके वेरंजा होने के अनेक प्रमाण मिले है।

मथुरा के हवेनसांग एवं अन्य भिक्षु :– हवेनसांग बताता है कि मथुरा वासी अभि धर्म के ज्ञाता सारिपुत्र, ध्यान के ज्ञाता मौद्गल्यायन, सूत्रों के अध्येता मैत्रायणीपुत्र एवं विनय के अध्येता उपालि को अपना आदर्ष मानते थे।[29]

हवेनसांग ने मथुरा नगर के पूर्व में लगभग 1 मील (5–6ली) उपगुप्त विहार का उल्लेख किया है। जिसके स्तूप में भगवान बुद्ध के केस और नख धातु सुरक्षित रखे गये थे। [30] इन विहारो में समय–समय पर बड़ी धूम धाम से उत्सव मनाये जाते थे। जिनमें सामान्य लोगों के अलावा राजा और मंत्री भी भाग लेते थे। मथुरा में एक बार बन्दर द्वारा भगवान बुद्ध को मधुदान का भी उल्लेख किया गया है।[31]

बुद्ध के पष्चात भी मथुरा बौद्ध धर्म का प्रमुख केन्द्र बना रहा। इसलिए बौद्ध धर्म भिक्षुओं का केन्द्र भी रहा। डॉ0 भरतसिंह उपाध्याय का तो यहां तक मानना है कि बौद्ध धर्म में पालि के स्थान पर संस्कृत में बौद्ध ग्रन्थो का लेखन–कार्य मथुरा से ही प्रारम्भ हुआ था।[32] माज्झिमनिकाय ने पता चलता है कि महाकात्यायन अवन्ति महा जनपद के षासक चन्द प्रद्योत के प्रमुख पुरोहित थे यहां प्रचार कार्य किये थे। भगवान बुद्ध के प्रिय षिश्य जनपद आनन्द के दो बौद्ध भिक्षु माध्यन्दिक और षाणवासी ने मथुरा में प्रचार प्रसार किया था। इसी प्रकार उपगुप्त नामक बौद्ध प्रचारक का मथुरा से विषेश सम्बन्ध रहा था। इनके विशय में दिव्यावदान नामक संस्कृत बौद्ध ग्रन्थ के पांसुप्रदानावदान33 से ज्ञान प्राप्त होता है। भिक्षुणी भद्राकपिलानी[34] एवं भिक्षु महादेव मथुरा से ही सम्बन्धित रहे है।

मथुरा से प्राप्त विहार व संभावित पहचान स्थल :–

1. मुज विहार – यह मथुरा षहर से 4 कि0मी0 दूर वाकलपुर गांव के निकट स्थित था यह कुशाणकालीन है।

2. हारूश विहार – मथुरा से 25 कि0मी0 दूर गोवर्धन के निकट अन्योर गांव में स्थित था। यहां से प्रथम षती की प्रतिमा प्राप्त हुई है।

3. स्वर्णकार विहार– यह विहार मथुरा षहर के सदर बाजार में स्थित था।

4. स्वके विहार – यह मथुरा से 7 कि0मी0 पष्चिम में बाजना गांव से सम्बद्ध था। यह मथुरा संग्रहालय की वीथिका सं0 15 में प्रदर्षित है।

5. सके विहार – यह वर्तमान कटरा केषवदेव के निकट कृश्ण जन्मस्थली पर स्थित है यह संग्रहालय की विथिका सं0 2 में प्रदर्षित है। इसके अतिरिक्त स्वको विहार, वीरदत्त विहार, उपगुप्त विहार भी यहां स्थित प्राचीन बौद्ध परम्परा व बुद्ध से अपना सम्बन्ध दर्षाते है।

निश्कर्श : इस प्रकार सभी उपर्युक्त विवरणों से यह स्पश्ट होता है कि छठवी षताब्दी ई0पू0 से 11वीं–12 वीं षताब्दी ई0 तक मथुरा में बौद्ध धर्म का वर्चस्व रहा था। स्वंय भगवान बुद्ध ने कम से कम दो बार मथुरा की यात्रा की थी तत्पष्चात उनके षिश्यो ने बौद्ध धर्म का प्रचार किया। आज की आवष्यकता यह है कि प्राचीन बौद्ध केन्द्र मथुरा में प्राचीन ऐतिहासिक स्थल खोजे जाये व पुरातत्वविद इस ओर ध्यान दे ताकि हिन्दुओं का यह महान तीर्थ स्थल अपनी बौद्ध संस्कृति को न खोये व प्राचीन बौद्ध संस्कृति की भी रक्षा भी करे।

REFERENCES

1. अंगुत्तर निकाय (1/167), एक समय आयस्मा महाकच्छानो मधुराय विहरति गुन्दावने) 2. मज्झिम निकाय (2/84) 3. मथुरा का निवासी वहां का उत्पन्न हुआ या मथुरा में आया हुआ। 4. पाणिनी (4/2/82) 5. पाणिनी (4/3/98) 6. (3/1/138 एवं वार्तिक 'गविच विन्देः संज्ञायाम्) 7. पतंजलि महाभाश्य (जिल्द1 पृ0 18,19 एवं 192, 244, जिल्द 3 पृ0 299 आदि) 8. महाभारत आदिपर्व (221/46) 9. वायु पुराण (88/185) 10. फॉरबोल, जिल्द 4, पृ0 79–89, संख्या 454 11. रघुवंष (15/28) 12. बुद्धिस्ट रिकार्डस ऑफ वेस्टर्न वर्ल्ड, वील जिल्द 1, पृ0 179 13. रामायण, उत्तरकांड सर्ग 62, पंक्ति 17 14. वाजपेयी कृश्णदत्त, मथुरा, पृ0 2 15. प्लिनी, नेचुरल हिस्ट्री, भाग 6, पृ0 19 : कनिघम एलेक्जेन्डर, दि ऐष्येज्योग्राफी ऑफ इण्डिया (इंडोलाजिकल बुक हाउस, वाराणसी, 1963) पृ0 315 16. कनिंघम एलेक्जेन्डर दि ऐष्येज्योग्राफी ऑफ इण्डिया (इंडोलाजिकल बुक हाउस, वाराणसी, 1963) पृ0 315 17. अंगुत्तर निकाय, जिल्द3, पृ0 256 18. गिलगित मैनुस्क्रिप्टस, जिल्द 3, भाग 1, पृ0 14–15 19. बुद्धचरित 21/25 20. गिलगित मैनुस्क्रिप्टस, जिल्द 3, भाग 1, पृ0 3–11 : दिव्यावदान पृ0 348–49 21. उपाध्याय भरत सिंह, बुद्ध कालीन भारतीय भूगोल, पृ0 367 : षर्मा, डॉ0 आर0 सी0, बुद्धिश्ट आर्ट आफ मथुरा, पृ0 40 22. मित्तल, प्रभूदयाल, ब्रज के धर्म सम्प्रदायों का इतिहास, पृ0 39 (दिल्ली 1968) 23. षर्मा आर.सी., बु. आ0 मथुरा, पृ0 40 24. दत्त, नलिनाक्ष और बाजपेई के0डी0, उ0प्र0 में बौद्ध धर्म का विकास, पृ0 97–99 25. मज्झिमनिकाय जिल्द 3 26. मज्झिमनिकाय (हिन्दी अनुवाद) पृ0 343 27. उपाध्याय डॉ0 भरतसिंह, बुद्धकालीन भारतीय भूगोल, पृ0 367 28. षर्मा आर.सी. बु0 आ0 मथुरा, पृ0 41 29. हवेनसांग की भारत यात्रा, पृ0 127 30. वही, पृश्ठ 128–129 31. वही, पृश्ठ 129 32. उपाध्याय भरतसिंह, बुद्धकालीन भारतीय भूगोल, पृ0 396 33. दिव्यावदान, पृ0 217 34. दत्त. एन और वाजपेयी के.डी., उ0प्र0 में बौद्ध धर्म का विकास, पृ0 14 (लखनऊ 1956) |